ISSN 2582-9661

नया साहित्य निबंध

पत्रिका

अंक ५,६ वर्ष २ वडोदरा - जनवरी-जून, २०२१ (संयुक्तांक)
मूल्य : ४० रुपए पृष्ट : ७२

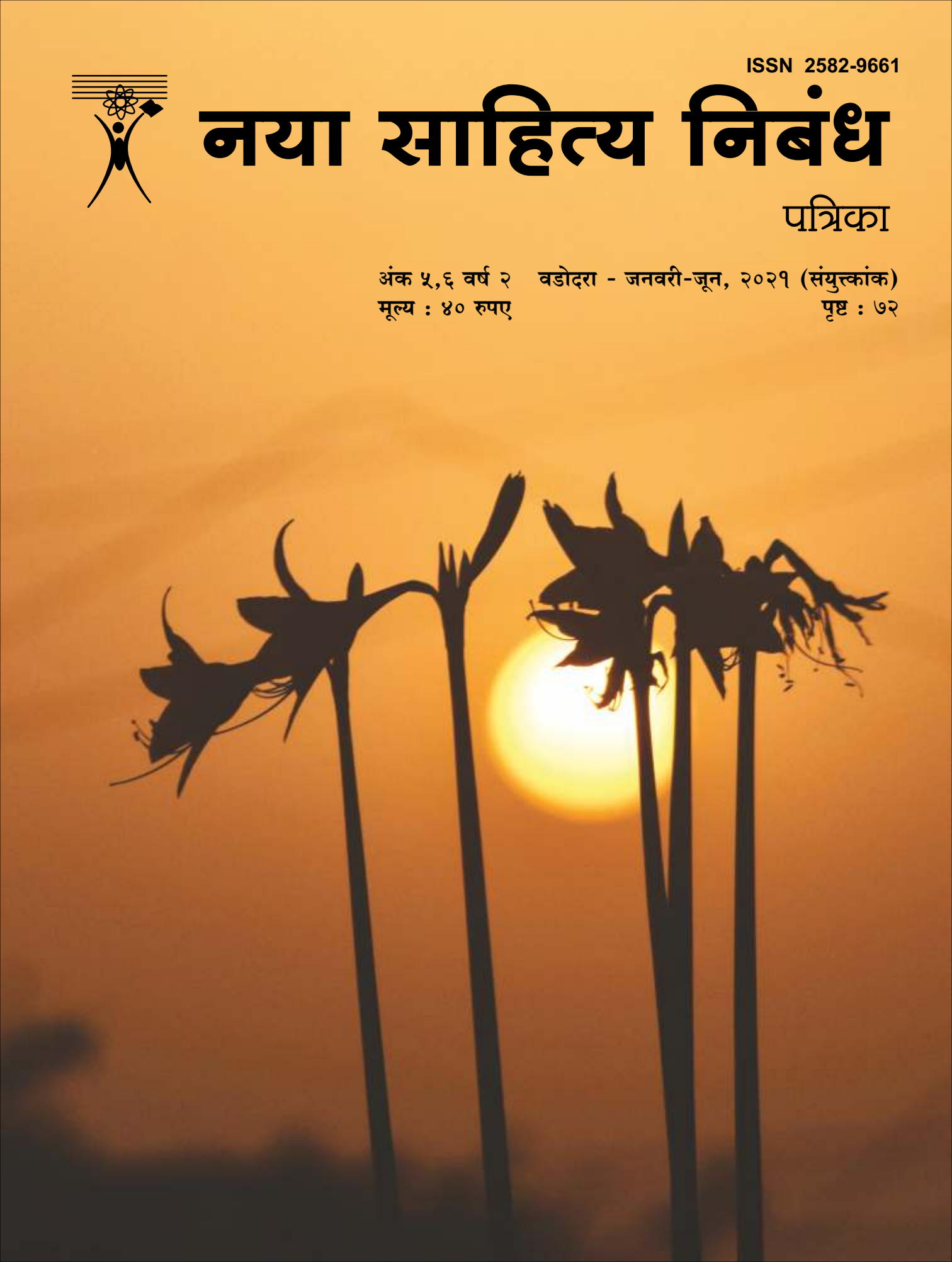

संपादक
रजत सान्याल

संपादक मण्डल
डॉ रानु मुखर्जी मो. : 9825788781
निर्देश निधि मो. : 9358488084
प्रतिभा प्रभा मो. : 7355468914
यामिनी नयन गुप्ता मो. : 921969813

कार्यालय सहायक
फाल्गुनी सान्याल
येषा, मनीषा काले

संपादकीय संपर्क
नया साहित्य निबंध पत्रिका
फ्लॅट १०१ योगीसेवा २, १२ ए सेवाश्रम सोसाइटी
आनंद विद्या विहार के पीछे,
एल्लोरा पार्क, वड़ोदरा - 390023 **गुजरात.**
मोबाइल नं. : 9898783519/9664698130
फोन नं. : 0265-2396701
ई-मेल : nayasahityanibandh@gmail.com
mail@rajatsanyal.co.in

सभी पद अवैतनिक है नया साहित्य निबंध पत्रिका से संबंधित सभी विवाद वड़ोदरा न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित लेख सामग्री पुन: प्रकाशन के लिए अनुमति अनिवार्य है । प्रकाशित रचनाओं के विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अंक मूल्य : ४० रुपए
वार्षिक सदस्यता : १६० रुपए
त्रैवार्षिक : ४८० रुपए
आजीवन : ३५०० रुपए
संस्था शुल्क :
वार्षिक २०० रुपए
त्रैवार्षिक : ६०० रुपए
आजीवन : ५००० रुपए
सभी भुगतान चेक/बैंक ड्राफ्ट, ऑनलाइन ट्रान्सफर से भी कर सकते है।
भारत के बाहर २ डॉलर वार्षिक : २५ डॉलर
बैंक एकाउंट नंबर : 3408000110040014 (बचत खाता)
RTGS/NEFT/IFSC : PUNB 0340800.

आवरण चित्र
बंशीलाल परमार : 9926494975

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक रजत सन्याल द्वारा जय प्रिंटेर्स ९३२ मकरपुरा, एरदा गेस्ट हाउस के सामने, वडोदरा-३९००१० से मुद्रित एवं फ्लॅट १०१ योगिसेवा २, १२ ए सेवाश्रम सोसाइटी,आनंद विद्या बिहार के पीछे, एलोरा पार्क, वड़ोदरा ३९००२३ से प्रकाशित। संपादक रजत सन्याल

जनवरी-जून, २०२१ (संयुक्तांक)

ISSN 2582-9661

नया साहित्य निबंध
पत्रिका

अंक ५, ६ वर्ष २ जनवरी-जून, २०२१ (संयुक्तांक) पृष्ट : ७२

इस अंक में

संपादकीय २

लेख
फणीश्वरनाथ रेणू एक व्यक्तित्व
- डॉ.रंजना जायस्वाल ३-४
शेफालिका समुद्रमंथन से प्राप्त एक उपयोगी पुष्पद्रुम पारिजात ही है।
- सीताराम गुप्ता ५-७
भक्ति का अनुपम महाकाव्य
- डॉ. नूतन पाण्डेय ८-१२

कहानी
धुप-छांव के दिन
- सुषमा मुनीन्द्र १३-१८
प्रायश्चित
- आभा श्रीवास्तव १९-२२
चदरिया झीनी रे झीनी
- डॉ. उपमा शर्मा २३-२५
विल्सन पार्क
- संजय कुमार सिंह २६-२८
हत्या
- डॉ.मृत्युंजय कोईरी २९-३१
आखिर क्यों
- डॉ. जया आनंद ३२-३५
भाग्या
- रोचिका शर्मा ३६-३९
सफलता का अभिशाप
- अंजु रंजन ४०-४१
अनुत्तरित प्रश्न
- डॉ.कुसुमरानी नैयानी ४२-४८
दायरे से बाहर
- मल्लिका मुखर्जी ४९-५१
धूप में पिता
- गोविंद सेन ५२-५४

लघुकथा
भूख से मरे शायर का दिवान
- रंगनाथ द्विवेदी ३१
परिचित
- डॉ.महिमा श्रीवास्तव ५१
मां की सीख
- यामिनी नयन गुप्ता ५४
वर्चुअलवर्ल्ड बनाम एक्चुअल वर्ल्ड
- मार्टिन जॉन ६३

कविताएं
तपेश भौमिक १२
रुपाली नागर ३५
रोहित अवस्थी ५५
धर्मेन्द्र गुप्ता ५५
नरेश अग्रवाल ५५
यामिनी नयन गुप्ता ५६
मुकेश तिरपुडे ५७
अनुपमा तिवाड़ी ५७
क्षितिज जैन 'अनघ' ५७
रुपाली नागर ५९
शिव कुशवाहा ६६

गजल
अशोक 'अंजुम' ७
आशीष दशोत्तर ५८

पुस्तक समीक्षा
स्त्रियां घर लौटती है
- डॉ. शुभा श्रीवास्तव ६०-६३
निश्छल और सहज प्रेमकी कहानियों
- दीपक गिरकर ६४-६६
स्त्री मनोभावों का प्रतिनिधित्व करती कविताएं
- हरेंद्र कुमार ६७-६८

संपादकीय

नया साहित्य निबंध पत्रिका का यह संयुक्त अंक आप सभी के हाथों में सौंपते हुए बहुत आनंद और ख़ुशी का अनुभव कर रहा हूँ, परन्तु साथ में कुछ चिंता, सवाल, डर भी है कि यह संयुक्त अंक 'जनवरी - जून', काफ़ी देर से पहुँच रही है आप सभी पाठकों तक। इस महामारी ने केवल हमारे ही जीवन को नहीं अपितु समस्त संसार को भयानक तरीके से झकझोर कर रख दिया है। कोरोना काल के इस समय में हमने अपनी बातों को कुछ अलग तरीके से करना सीखा है, कुछ परिचय भी हुए अपने नयेपन के साथ लेकिन अभी भी डर की स्थिति कम नहीं हुई है।

इस अंक में देश के विभिन्न लेखक व लेखिकाओं द्वारा रचित उत्कृष्ट रचनाओं को चयनित कर उचित स्थान दिया गया है। नया साहित्य निबंध पत्रिका देश और विदेश के हिंदी पाठकों के दिल के समीप है और हिंदी साहित्य के प्रचार व प्रसार में उत्तरोत्तर वृद्धि कर रही है। इस उद्देश्य और आशा के साथ कि हम रचनाधर्मिता को और भी परिष्कृत कर साहित्य सृजन में अपनी भूमिका का समुचित निर्वहन कर सकें।

'' तुझे किताब से मुमकिन नहीं फ़राग़ कि
तू किताब ख़्वाँ है मगर साहिब-ए-किताब नहीं''

अल्लामा इक़बाल

लेखन एक बौद्धिक प्रक्रिया है, मानसिकता पर निर्भर है। लेखन कई तरह के है निजी लेखन, सामाजिक लेखन। हिंदी साहित्य के प्रख्यात कवि मैथिलीशरण गुप्त जी की दो पंक्तियाँ

''राम तुमारा चरित्र स्वयं ही काव्य है
कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है''

साहित्य अमर है साहित्यकार, कवि, रचनाकार भी। साहित्य जो अपनी रचनाओं से दिल को चीर कर रख दे, छू दे दिल के अंतर्मन को, समाज को बदल दे वही साहित्य है। अपने सुझाव और अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य ही अवगत कराएं।

इस सदी के विशिष्ट साहित्यकार, लोकप्रिय कवि, रचनाकार एवं अभिनेता, राजनीतिज्ञ जो इस कोरोना काल में हमारा साथ छोड़कर चले गए जो सुदूर अंतरिक्ष में सितारा बन झिलमिला रहे हैं उन्हें हम हृदय की गहराई से अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

नोबल पुरस्कार से सम्मानित महाकवि टी एस इलियट साहब डि वेस्ट लैंड किताब से एक पंक्ति :

थंडर की आवाज़ का दत्ता (Dayavan)
और दमयता ऊ्रारींर स्तोत्र बृहदअरण्यक
उपनिषद से उपयोग करते है।
दत्ता दें दयध्वं Dayadhvam हमदर्दी
दमयता वरारींर नियंत्रण
ओम शांति शांति शांति :

- रजत

लेख

फणीश्वरनाथ रेणु एक व्यक्तित्व

•

डॉ. रंजना जायसवाल

मो. : 9415479796
ई-मेल : ranjana1mzp@gmail.com
संपर्क : लालबाग कॉलोनी, छोटी बस ही मिर्जापुर, उत्तरप्रदेश, पिनकोड-२३१००१

- दिल्ली एफ एम गोल्ड, आकाशवाणी वाराणसी और आकाशवाणी मुंबई संवादिता से लेख और कहानियों का नियमित प्रकाशन,
- पुरवाई, लेखनी, सहित्यकी, मोमसप्रेशो, अटूट बन्धन, मातृभारती और प्रतिलिपि जैसी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ऐप पर कविताओं और कहानियों का प्रकाशन।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात देश में नवनिर्माण के नए द्वार खुले। साथ ही नई समस्याएं, जीवन तथा समाज का नया रुप भी सम्मुख आया। फल स्वरूप साहित्य में भी नई दिशाओं में नवीन प्रयोग देखने में आया। नई कहानी, नई समीक्षा, वैज्ञानिक इतिहास, लेखन, शोध, प्रतीकात्मक एकांकी, ललित निबंध, रेडियो रूपक, डायरी, रिपोतार्ज आदि कितने ही नयी विधाओं के अंतर्गत आज उच्चकोटि के कथित साहित्य का सृजन हो रहा। अनेक पुराने साहित्यकारों के साथ ही नए समर्थ गद्यकार आगे आए। इस समय वह हिंदी गद्य कोस शक्त और समृद्ध बना रहे थे। इन सभी गद्यकारों में फणीश्वरनाथरेणु का नाम सबसे ऊपर आता है। रेणु के लेखन में दृश्य किसी फिल्म की तरह हमारी आंखों से गुजर ते चले जाते हैं चरित्र की एक-एक परत खुलती चली जाती है। उनके लेखन में कल्पना भी है, नरमी भी है, सजीवता भी है और रस से भरी भाषा भी है। जो उपन्यास में प्राण फूंकने और चरित्रों में जीवन देने का कार्य करती है।

सच कहूँ तो.. जो व्यक्तित्व अपने जीते जी ही किवदंती बनकर अपने समय के रचनाकारों के लिए एक प्रेरणा एक मिशाल था वही कुछ रचनाकारों के लिए जलन और ईर्ष्या का भी कारण बना। ''फणीश्वरनाथरेणु'' आज न होते तो अपने देश की आत्मा से हम कुछ और कम जुड़े होते। ऐसे बहुत कम लेखक होते हैं जो अपने जीते जी ही किविदंतियों का हिस्सा हो जाते हैं जो अपने समय के रचनाकारों के लिए प्रेरणा और जलन दोनों का कारण एक साथ ही बनते हैं। रेणु का व्यक्तित्व ऐसा ही था, ''अज्ञेय'' उनकी घनिष्ठ मित्र थे उनके द्वारा उन्हें धरती का धनी कथाकार कहा जाना बहुत बड़ी बात नहीं है...एक मित्रसे यही उम्मीद की जा सकती है। लेकिन रेणु की साहित्यिक धारा से बिल्कुल अलग लिखने वालों को भी उनकी कलम की ताकत से इंकार नहीं था। एक रचनाकार के लिए इससे बेहतर कुछ भी नहीं हो सकता। 'रेणु' का एका एक उभरना साहित्य के मठों में बैठे लेखकों के लिए परेशान करनेवाला विषय था। उन्हें प्रसिद्धि इतनी जल्दी मिली थी इल्जाम भी उतनी आसानी से हवामें गूँजने लगे। नजाने कितनों ने आरोप लगाया मैला आंचल चोरी की रचना हैं। जाहिर है रेणु आहत भी हुए होंगे आत्मा को तकलीफ भी पहुंचती ही होगी पर उन्होंने विरोध जताना उचित नहीं समझा।

आरोपों की आंधी जैसे चली थी वैसे ही अचानक थम भी गई जैसे धूलकी आंधी के बाद का आकाश सबसे ज्यादा चमकदार होता है। ''रेणु'' मुँह से तो कुछ नहीं बोलते...बोलती तो थी सिर्फ़ उनकी लेखनी अब और भी ज्यादा चमक के साथ और भी पुष्ट रूप में। रेणु की आंधी में प्रांत और भाषा की दीवारें जैसे ढह पड़ी थी, उनकी लेखनी में यह प्रभाव यूंही नहीं आया था, इसके लिए उन्होंने लंबी साधना की थी और अथाह अध्ययन भी किया था जो पढ़ा उसे समझा-बुझा आत्मसात किया तब जाकर ऐसी दुर्लभ रचनाओं की रचना की।

रेणु ने नई कहानी आंदोलन को खारिज किया था। इस आंदोलन को शुरू कर ने

वाली तिकड़ी में शामिल और नगरी सभ्यता के मशहूर कहानीकार कमलेश्वर ''रेणु'' के बारे में कहते हैं, बीसवीं सदी का यह संजय रूप, रंग, गंध, नाद, आकार और बिम्बों के माध्यम से महाभारत की सारी वास्तविकता सबको बयान करता है।

वही निर्मल वर्मा रेणु के समकालीन कथाकार रहे हैं, एकांत से एकालाप करनेवाले इस रचनाकार के रेणु के बारे में विचार कम चौकानेवाले नहीं है। मानवीय दृष्टि से संपन्न इस कथाकार ने बिहार के एक छोटे पिछड़े भूखंड की हथेली पर किसानों की नियति की रेखाको जैसे उजागर कर दिया था।

कहते हैं जिस चीज के बारे में हमने पहले ही सुना और समझा हुआ होता है उसके बारे में लिखना सरल होता है। जब हम पड़ी सुनी चीजों को वैसे का वैसा ही रच जाते हैं तो वह नकल होती है पर जब हम सारे संचित को किसी खास परिदृश्य में रखकर सोचते और शब्दों की माला में पिरोते हैं, उसे मिलाकर नया बनाते हैं तो वह कुछ अलग सा होता है। गाँव वही थे, गाँव वाले भीव ही थे यहाँ तक कि ग्रामीण जीवन भी बहुत हद तक वहीं था पर रेणु के अनुभव यहाँ अपने थे। यहाँ अगर प्रेमचंद की रचनाओं में दिखनेवाला मोहभंग थातो साथ ही विरासत को मजबूती से थामे रहने की हिम्मत भी। वही उदासी में भी लोक धुनों और लोकगीतों को मस्त होकर गुनगुनाने साथ ही समस्या में भी राह खोजने वाली जीवटता भी थी।

रेणु की लेखनी को देखकर ऐसा लगता है जैसे प्रेमचंद्र के बनाए खाको में रेणु ने अपनी कल्पना और अपने दृष्टि के रंगभरे हो। प्रेम, सद्भावना, संभावना, सहभागिता के गाढ़े और पक्के रंग उन्होंने चुन-चुनकर ऐसे भरे की आज भी वो हमारी अंतरात्मा पर छाये हुए है। गोदान के बाद मैला आंचल ही वह दूसरा उपन्यास है जिसने उसीकी तर्ज पर उसी गति से हर तरफ चारों दिशाओं में तारीफ पाई थी। उन्होंने अपनी रचनाओं खासकर अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज को जाति विहीन समाज का सपना भी देखा पर उनका ये सपना ...सपना ही बनकर रह गया और जिसे ना रच पाने का खामियाजा हम आज तक देख भी रहे हैं और भुगत भी रहे हैं।

रेणु का समय प्रेमचंद के ठीक बाद का था तबतक एक तरह के अभिजात्य बोध का साहित्य पर कब्जा हो चुका था। भाषा शब्दों और नए-नए प्रयोग के खेलमें फँसने लगी थी। स्वतंत्रता के बाद नया जीवन था प्रगति के नए-नए सपने थे, ऐसे में सबसे आसान था कि जो राह चल रही है उसी पर आसानी से चल देना, उसी राह पर चलकर शहरी और मध्यम वर्गीय जीवन की कहानियां लिखते जाना पर रेणु ने ऐसा नहीं किया उन्होंने अपने भीतर से निकलती उस आवाजको सुना आजादी के बाद दम तोड़ते हुए गाँव, ग्रामीण तथा ग्रामीण समस्याओं को सुना और अपने लिए वही रास्ता चुन लिया। मैला आंचल के बाद कुछ लोगों ने कहा कभी-कभार ऐसी दुर्घटना एं जीवन में घट ही जाती है। रेणु अपने जीवनमें मैला आंचल जैसा दूसरा उपन्यास कभी भी नहीं लिख पाएंगे, लेकिन कठिन परिश्रम और अभ्यास से उन्होंने ''परती परीकथा'' उपन्यास लिखकर लोगों के मुँह बंद कर दिए।

रेणु' के लेखन में दृश्य किसी फिल्म की तरह आपके आगे से गुजरते चले जाते। कोई नैना जोगिन हो या कोई लाल पान की बेगम(बिरजूकीमाँ)कोई निखट्टू कामगार पर गजब का कलाकार सिरजन हो या चिट्ठी घर-घर पहुँचाने वाला संवदिया हरगोविंद या फिर ''इस्स'' कह कर शर्म से दोहराता हीरामन और अपनी नाच से बिजली गिराती हीराबाई या फिर पँचलाइट ''पेट्रोमैक्स'' के आने से गांव भर में खुशियाँ, उसकी रोशनी से चौधियायें और डरे हुए गांव के भोले-भाले लोगों सबके बारे में बस यही कहा जा सकता है। जैसे उपन्यास पढ़ नहीं रहे बल्कि जी रहे हैं।

आज रेणु के नहीं होने पर चार दशक बाद भी जब हम उनकी रचनाओं को देखते हैं तो मनोविज्ञान पर उनकी पकड़ गांव को देखने से ज्यादा जीने वाली प्रतिभा को देखकर चौक पड़ते हैं। आज हमें रेणुकी कमी ज्यादा लगती है, क्योंकि इस दौर में गांव पर लिखने वाले लेखकों की संख्या न के बराबर है। जबकि आज के दौर में गाँव, गाँव के लोगों की समस्याएं दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है और उनको देखने-समझने और उनके बारे में लिखनेवाला कोई नहीं है।